

नमः ॥ मूर्ख ॥ मरुब्धत्राय दक्षाय नमः ॥ इति ॥ ततः ॥  
 कत्र न्यासः ॥ यन्मन्त्राय नमः ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ गुह्यं ॥ नमः ॥ न तर्ज  
 निह्यं नमः ॥ मम धनं नमः ॥ ॐ ॥ नमः ॥ नमः ॥ वा  
 कन्या ॥ का नमः ॥ अकत्र नमः ॥ यद्वा नमः ॥ ॐ ॥ ति क  
 वन्या सः ॥ अथ दक्ष दद्यादि न्यासः ॥ ॐ ॥ इति ॥ नमः ॥ नमः ॥

१२५२ नित्या र्यनवेधि

आर्यभट्ट  
 ARCHIVES

2999

२१



स्वाहा॥मृगिरवथेवषट्॥षीकवत्रायैद्रु॥वानेगुयया  
यवेषट्॥मृगिरवथेवषट्॥ॐस्वंगन्यासधाअथमंकन्या॥॥  
ममसकेलयायद्रुयद्यात्रासद्यालक्षसिध्दर्थविरुतिक्षान्  
तमहंकलिष्या॥ॐतिर्मल्यविरुतिवामहस्रगुहला  
विरुत्ययत्रिजिकानलिखित्वागन्मक्षेत्रकात्रीलिख

ततादग्निनहस्रनयिष्यथेवकींसीहोनमॐतिमनुनदध  
धजयिष्याथेवकींसीहोनमनिवायकुनततद्वगदधधजयत्  
तताविरुतिजलनसंमद्यथेवकींसीहोनमनिवायःॐति  
मनुनयिष्यन्दकयात॥ॐ३मन्त्रंॐॐॐनाथनमः॥गिन  
सिःॐ३ममहादवायनमः॥ललाटःॐ३ययुयनाथनमः॥



हृदि ॥ ॐ ३ हि मा य न म ४ क ल ० ॥ ॐ ३ मूं ३ उ य य न म ४ ना न  
॥ ॐ ३ मूं वि न रु द्रा य न मः दाः कृ यो न म नि व १ श्र य ॥ ॐ ३  
मूं ३ श्र य य न मः क कृ दि ॥ ॐ ३ मूं न द्रा य न मः कृ ३  
३ वी ॥ ॐ ३ मूं रा वा य न म जा नू या द याः ॥ ॐ ३ श्र य  
न मः स र्व ॥ ॐ ३ वि रु ति क्षा त्र यि त्वा त म् नूं य था ॥

कि ज यि त्वा ऊ य नि व द्र य न ४ म न्द्र मा व य दि वि वि  
रु ति क्षा त्र य वि वि ॥ ॐ ३ ॥ ॐ ३ वि रु ति क्षा त्र य  
म रु क लि ॥ ॥ ॐ ३ म न्द्र य न ४ ॥ ॐ ३



[illegible]

५२

किं हि २ विन्न का दृष्टा ये कः म म्मा य ह ट या इ कां ॥ ३ ॥ ३ ॥  
 ट व क य ऊ न स्वा हा ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥  
 ह ट स्वा हा ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥  
 व का दृष्टा ये कः म म्मा य ह ट ॥ ६ ॥ ६ ॥ ६ ॥ ६ ॥ ६ ॥ ६ ॥ ६ ॥ ६ ॥  
 ला ये ऊ षी म्मा य स्वा य या इ कां ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥



ये झांझा न ऊं नि स्यां या द की ॥ झांझा दू व र्व व नि श्व दू धा म  
 ध्वा मा य वा इ की ॥ अ धा व अ धा व अ धा व नाम शिव व दू नु या  
 ये दू धा अ ना मि का ये या इ की ॥ अ ॥ न्ना वि म ह ना वि का ये की  
 धा का नि वि का ये या इ की ॥ अ कि ति र वि त्र की कृ त्ता ये द  
 ४ अ म्ना य रु द्वा इ की ॥ क व त ल क ण श्र य ॥ ०० नि न न्या  
 क

३ जें अ धा व अ धा व अ धा व अ धा व अ धा व  
 स ४ ॥ जें ज न भा र ग व ति दू कम ला ये झांझा उ द्ध व का य  
 या इ की ॥ अ न्ना वि का ये कृ ल द्वा या ये झांझा ध र्व व का य  
 २ ॥ झांझा दू व र्व व नि श्व दू धा दू धा व का ये ३ ॥ कां वि म ह  
 ना वि का ये झांझा य वि म व का ये ३ ॥ अ कि ति र वि त्र का  
 कृ त्ता ये द ४ धा य न य न व का य ३ ॥ जें झांझा न्ना वि का ये न मा

न न्या य ३ ॥



एग वतिह कमला ये जांथा ह दयाय नमः॥ धूं क वि  
 काय कूल दीपा ये धा नित्र स स्ना हा॥ जां जां ह व वत्र  
 निश्व ह धा निरवा ये व वट॥ ज ध्या त्र म ध्या म ध्या ना  
 म्भ रि व द्रु नू पा ये द्रु धा क व वा य द्रु॥ कों चिं म ह ना त्रि का  
 ये जां धा न उ उ यो व वट॥ कि नि र वि त्र का क धु थि द्र ॥ म्भ  
 य

ये हट॥ हू ल्य ह ना स॥ गभा जल पाण यू ज नी॥ त्रें ज धा ज  
 ल या ज स ना य या इ की॥ त्रें धू न न न द ह कि र व व  
 न न द वी ना धि प त थ न दू धा जल पाण ह दान  
 का य या इ की॥ उं जां ह धू द या य न मः॥ हू ल्या दि॥  
 आ वा ह ना दि॥ ध न म्भ द ह य ॥ त्रें ज क वि का य



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥  
 विष्णु कलदीपाय धीमही तन्वकु विष्णुनादया ॥  
 ७ ॥ अनन्य आत्मादि सर्ववस्तुधा कर्ता ॥ अथार्थयाग  
 यज्ञा ॥ १ ॥ अथ याग सनाय ॥ २ ॥ अथ याग सनाय ॥ ३ ॥  
 किं हे नवानन्दनामहाविद्यायाग इव ॥ विष्णुना  
 अथ याग एवायका य ॥ ३ ॥ यज्ञानसंयमया निम्न

यज्ञानसंयमया निम्न

मजा ॥ गता ह तद्गु द्वि ॥ १ ॥ नेना ॥ २ ॥ दी ह दि ॥ ३ ॥ मरवा ॥ ४ ॥  
 रुम ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥  
 नया ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥  
 ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥  
 ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥  
 ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

१०१ ॥ १०२ ॥ १०३ ॥ १०४ ॥ १०५ ॥ १०६ ॥ १०७ ॥ १०८ ॥ १०९ ॥ ११० ॥ १११ ॥ ११२ ॥ ११३ ॥ ११४ ॥ ११५ ॥ ११६ ॥ ११७ ॥ ११८ ॥ ११९ ॥ १२० ॥



अथ ३॥ त्रिदिव दूता ३

आत्यमरुत ३॥ द्योयादकां ॥ ३॥ ॐ तिष्ठि धात्मानं जघ  
यायुः लविदनासि च य ॥ श्रीमत्तुलाभ नमः वा  
हना ॥ आवाहयि ॥ श्रीमत्तुलाभ नमः क मय दमिहिता  
नन्दन कि ४ सु ही मा लु वि आ य न तु र्क म क ल क ल न  
नं व अ कं चा न य ष द्वा च त्वा नं य अ का ल्प न व यि न तु नः अ लय  
(न्यादि) क्रां य न ल व न य स रु क ॐ ह वा स २ न्यादि क्रां य न व न य स रु  
क ॐ ह वा स रु क २

ह गाम तु ल न स र्ग ह र्क य न ग म न म ति न व र्ग ह न व र्ग  
क ज ही ॥ नै ज र्ग अ न न म तु ल ही आ दि द व या द कां ॥  
नै ज न रा स ना य ३ ॥ नै म य ना स न श नै म न स ना य ३ ॥ र थ  
य स र ल द्वा य द म्ब की द वी म ह र्क क र या ला य ३ ॥ ध र्क व र लि  
॥ नै ज र्ग क्रां क ल य न व र्क म ना थ य ३ ॥ व लि ॥ नै म न ज ग ३ ४



शोभा कल गल वत्राय ३॥ वलि ॥ आ वा अ दधु त ऊ नि रा ड  
 म द्वां दर्शय ७॥ ॐ नमो शि शु द्वि रा दान काय ३॥ थ  
 न वलि ॥ ॐ नमो शि शु आ न न्द व कि रु न वान वा ना धि  
 प्र तय म् ॥ शान मु वा सा यु नु म लु ल रु द्य का य स्व ण कि  
 सहि ना ॥ ॐ नमो शि शु य ३॥ वलि ॥ ॐ नमो शि शु नू य कि रु द्य व का य

३॥ वलि ॥ ॐ नमो शि शु अ य धि क र्म रु द्य व का य ३॥ वलि ॐ न  
 वा स ना य ३॥ ॐ नमो शि शु स ना य ३॥ ॐ नमो शि शु स ना य ३॥ ॐ नमो शि शु स ना य ३॥  
 ना थ य स्व म कि सहि ना य ३॥ वलि ॥ ॐ नमो शि शु स ना य ३॥ ॐ नमो शि शु स ना य ३॥  
 हा ना य ३॥ ॐ नमो शि शु स ना य ३॥ ॐ नमो शि शु स ना य ३॥ ॐ नमो शि शु स ना य ३॥  
 स ना य ३॥ ॐ नमो शि शु स ना य ३॥ ॐ नमो शि शु स ना य ३॥ ॐ नमो शि शु स ना य ३॥

स







२ वि ३॥ ३३३ नमा र ग व ति कू क वि का य मूँ मूँ मूँ  
८ न न म म घा त्र म र्खी का की कि ति २ वि ३॥ ३३३  
ममा र ग व ति सिद्ध मूँ मूँ कू वि क मूँ मूँ मूँ ख छेने  
म घा त्र म र्खी का की कि ति २ वि ३॥ वलि ॥ धर्म वलि  
॥ नमो नमो शिव नमि कम र घ त्र का य या द का ॥ वलि +

३३३ ममा आन नद न कि र त्र वा न न वि त्रा वि य तथ  
ममा ममा या द का ॥ ३३३ धी धी धी ममा आन नद न कि र  
ममा न का न न द धी ममा वि द्या ना ३३३ ज ध व त्र र र व द  
का ॥ ३३३ स र र धी न न न न न मा र र व नु म नु र व नु नि  
र व नु र र र का य या द का ॥ ३३३ न न न न न न न न न न न



सुभादि सुभादि ३

१. सिंहा मना य ३॥ ने जाँथा के को मूरी जा न नद  
कि रे न वान नद ही महा विद्या त्रा उच्च वी वि द्या  
आय वि मय ल रान न ह द न का अया द की य ॥ १  
मूरी य नि सा ह द न का य ही या द का ॥ धन न वि लि  
३॥ ने जाँथा के को उँ जा न अ य द मू उच्च न धु वि

ASHA ARCHIVES 2009











हनाथामि कछामहागि पत्रसन्द्री दविपत्रवक्षससहकि  
घापादकी ॥ ३ ॥ यत् ॥ मनुपूजा ॥ वलि ॥ जय ॥ यै स्वाहा ॥ ह्री  
स्वाहा ॥ ह्री स्वाहा ॥ ॥ श्री ॥ पादकां ॥ उं जां कु  
हं रुं कां कां नमः ॥ १० ॥ ॥ वे के सो के के के के के के स्वाहा ॥  
जय समर्थनी ॥ ॥ मधुपूजा ॥ जे जा धी कुं ह्रीं कुं कुं कुं ॥ ॥

॥ ॥ मधुपूजा ॥ मधुपूजा लाका लीया ये जनवराचर ॥ तस्य  
देव हि गेयन तस्मिन् धी गुरुव नमः ॥ श्री महादेव वायना  
दय वाच ॥ श्री सैव ह्य मधुला के कसय द सहि तानन्द हो कि  
॥ ॥ श्री मासु चि न्याय च उं कुं मकल कल गतै र्वै र्वै र्वै  
न्यै र्वै ॥ तुला च ॥ यै र्वै का न्यै ॥ यमन र्वै च उं र्वै ॥ गुरु ॥ ताम  
लु लन सै र्वै र्वै यन तस्मिन् नम ति गुरुव नम र्वै र्वै र्वै र्वै र्वै

उं जां मां र्वै र्वै ॥ जां मां र्वै र्वै ॥ जां मां र्वै ॥



कही॥ उरु लाम्ब डक हि कांय विगता धी सिद्धि लक्ष्मी व  
ना कथी नमू टिके नू कू नू धतला निःशेष वाधा यहा॥  
संसा ना सं वेद ४ रवरी के लहरी निष्कय ना स वेदा धूम  
लै व मूरव म्व जो द न उ जा यता स्कि ता या उ व ॥ ने व स्थ  
वहा ना स न स्थ द ध ती म ल ल ला ट प्र लां ही की कानि म  
बू ल म नि व सि न थ्या गि न ती सर्व त ४ न धा सो वि य ना ह दि

द्युति विधा श्री ॥ ६॥ ४ सदा रु स्कि ता कि न्द्यां तं ४ सह साय  
द सि रि व दी शी नि मयी वा द्य री ॥ यथा वा नू य हा ना  
नं क व री रु व ति वा न री ॥ ग द द ग वि द्या ता नी ल नि क  
व रु वा न री य नि म शी शी ४ म हा मा या सि द्धि ल क्ष्मी  
प्रिय न सु न्द ना नि ल क म्मा द वा र्व न नि मि ल य ले न न म्मा



कंसग हसय त्रिवात्रार्थ आ यत्रा ग्राग्ये वे ह्यर्थे ज  
न व न ल श्री स न गि स नो न व द्वि त्र सु य धा हा शु  
क शु ह ल द शि ना र व नु ॥ म न्ये य स व र्ण ना सि लः  
भव न व र्ण म म । त स्मा क्का ल द र्ण व न न क श य न म ध्व  
वि ॥ ॐ ति स्ता पु ॥ ॥ ग य र्ण ॥ ॐ न म ः श्री ना धाय ॥ ॐ न म  
ध्वी सि दि ना धाय ॥ ॐ न म ः श्री क श न ना धाय स भान म ॥

॥ ३ ॥ प्र का न क ह व नि म् र्हि य ॥ ॐ ह्व त्रि वा स व र्ण ना  
ग न ना य मा र ग व ति नि ॥ ॐ ह्व त्रि द क्रि ॥ ॐ ना ग म्  
क श व र्ण क व लि कां वा न ह्व दि ग्हा ग म् ध्वी वा र्ण य ह मा मि  
वि ह्व क न न दि ॥ ॐ ह्व र्ण सि दि दी ॥ ॐ सि र वि व्वा क म् ध्व य क  
म म्मा य ह ॥ ॐ क श व र्ण ॥ ॐ म्मा य ह्व र्ण ग र्ण व द र्ण व ति ॥ ॐ ग व  
न यो र्ण का र्ण व न क व द्वा ना ग धा ह्वि ह्व व क म वि वि प र्ण



। ली स हि न त्रयं च कं ग द न व धी था गि नी र्प च कं च डार्क  
व म वि वि व द्र म म लं मा या उ नि र्प कृ डा ॥ द्रा मा च मा नि  
य स्वा हा ॥ ने ग कि नि र वि द्र का ॥ सु य द्र म सु य द्र म  
हा ॥ ३ ॥ उं न मा ए ग व ति ह ल म लो य द्रा धी द्र द या य व म ॥  
मा ल ज या दि ॥ व ति ध य ॥ स हा म द्रा न ॥ वि द्रा धी कृ क  
को धुं धी द्रा ने ॥ म र्थ या ग्रा दि उ ल द न ॥ म र्च म ॥ ५ म र्च

ली ॥ द्रा कृ ल मा र्क लु म हा ए न वा ये म र्च न म ॥ ४ ॥ नृ व च न द न  
कृ न य धी न म ॥ द्रा सु र्थ य ॥ २ ॥ धी न म य न य ॥ २ ॥ धी ना वा  
य न य ॥ २ ॥ धी व द्रा य २ ॥ धी स द्र द व ता ला २ ॥ म्वा वा ह न  
हा य न य न द ना कृ न य धी २ ॥ धन या नि म द्रा न द न यि गा न  
का न ॥ म्म धू र्थ ॥ मा रि या ॥ नि म्मो ल्य ना थ य स हा कि र  
हि ना य न म ॥ ३ ॥ नृ व म र्च ला हा ॥ नृ व च न द न कृ न य धी न म



॥ ॥ ॐ नित्यार्चन विधि ॥ ॥

१ किं किं ३४ खंद नूतन लनी कीथन न ह्मता यां का । का सकि ४ कूलक  
मलिनी पायन नो चिना यां । का का किं ४ सून वन नूतन या पातन  
सुहायी कंक आगं त्रयिन दिन न चिरुमाल चिना यां ॥ १ ॥ सग्न स  
सग्न नमः, ह्मनिनाम द विग्न ॥ चि चिन्दम पुला न ४ ह्म नमः ह्म  
वत्त ॥ २ ॥ उग क्लाद ना आगं सा गथा गवि आगिनि ॐ नित्य वत्ति  
गग्न नी नमः ४ ह्म नूपि यम्बिक ॥ ३ ॥ सावा सावय ध ४ सावे सो सा वी दय  
का मलि । येन न वचक द वि बुद्ध याति नमः ह्म ॥ ४ ॥ ह्म ह्म ह्म  
वत्त ह्म न प्रत्युक्ति न पदा दय । वि द्विग्न नमः ह्म सा सा सा न



मनुज ॥ ५ ॥ वृक्षकृष्णतकित्रल वृक्षवका नत्रादिना । वृक्षार्थ ॥ १० ॥  
 व्यात्रिणि वृनमभु निपूत्रव्यत्री ॥ ५ ॥ वत्रावत्रमिदं विध्य स  
 काशयसिवाद्यथ । मारुका नृयमाह्वय तस्मैमातर्नमास्तुत  
 ॥ १ ॥ स्मृता रवरायंद सि च्छिन्ना सिवहा कुत्री । सुता सिवा  
 क्षिणा दत्री ददा सिक्त्र लोपत्र ॥ ८ ॥ रका सिमनि ल्य पूजा  
 सकस्य समत्र नत्रावाग्वादि मदा सिद्धि दत्री निपूत्र स  
 न्दत्रि ॥ २ ॥ यत्र मान न्द संद हि प्रमादत्र स निवृत्र ॥ ३ ॥ ख  
 ययव त्रिसाक्ष वदने गाहि मां निव ॥ १० ॥ ॥ १ ॥ वृष क्रमय स

कु द विनिपूत्र सन्दत्री । यथा ॥ १ ॥ कि ज यं पूजां गृहान  
 मदनूय साग ॥ ११ ॥ दद्यदि न क्रिया दीनं मनुदिनं ~~मनुदिनं~~  
 सूनव्यत्रि । तस्मैर्वृक्षयया दत्री क्रमस्व यत्र मव्यत्री ॥ १२ ॥ यत्र  
 या क्रियुक्त कर्म जा गृह्य प्रसू किषू । तस्मैर्वृतावकी पूजा  
 रुया दूष्येन मनिव ॥ १३ ॥ यत्र या क्रमिदा रुना रुम रुस्व  
 म ल्य ~~म~~ वत्रा । रुम सर्व रुग हा सि रुम यमय मे ऊ लि ॥ १४ ॥ अ  
 खलु मनु लाकारं या फंड न वत्रा वत्रा । तत्र दंदनि तयन  
 तस्मै ही गुत्र वत्र म ॥ १५ ॥ शीम हा रत्र वा य । गदय वाव ॥ मार्क ॥ १६ ॥



वनं स्मिन्निवसन्नपुत्रो मम पुत्रस्तथा तदा वनं नृकृतं  
यत्र भवति ॥ १॥







ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
इति श्री